ध्यान

मुरली मुकुट पीताम्बर धारी।
यशोदानन्दन दैत्य मद हारी॥
गोपीमन हारी कामवश कारी।
विपिने क्रीडति (श्री) कुंजविहारी॥

श्री बिहारी जी का शृंगार वर्णन

चांदी के डंडा लगे तखत बना अति सुन्दर।
रीति नाल पर्दा बंधे जोग पीठ है अन्दर॥
चटकीली पगिया बंधी तापे मुकुट बिराजै।
इत बित में तुर्रीलशी बिंदिशा मस्तक राजै॥
चक्षु सूर्य प्रकाश है तम नाशक मुस्कान।
रीति प्रीति दीखें दसन नासिक मोतिन ध्यान॥
चम्प कली हीरा जड़ी तन में पहरत श्याम।
प्रीतिनाल बाजू बंधे पगड़ी लठिया थाम॥
चटकीलो पटका बँध्यो तनक घूम का जामा।
ईश कमर में बन्द है किंकड़ी खूब सुहामा॥
चरनन की सेवा भई तुलसी चन्दन फूल।
श्रीस्वामी हरिदास जी गये प्रेम में भूल॥
चलती झांकी मैं लखो तन, मन, धन को चोर।
इत वित सौं मन रोक के निरखों नन्दकिशोर॥
चलते विन्दा विपिन में जब यमुना स्नान।
कुञ्ज बिहारी लाल को निधिवन जन्म स्थान॥
चकित भये हरिवंश जी तनक देख हरिदास।
श्रीबिहारी बिहारन लाल जू अंक विराजत पास॥

–नि.वा. गोस्वामी श्रीब्रह्मानन्दवेदान्तीजी महाराज

भजन

सुन्दर रज तिलक भाल बाँकी भृकुटी बिसाल,
रतनारे नैंन नेह भरे दरस पाऊँ।
वारौ छवि चंद वदन सोभा सुखसिंधु सदन,
नासावर कीर कोटि काम को लजाऊँ॥
अधर अरुन दसन पाँति कुंदकलिका बिसाँति,
कमल कोस आनन दृग मधुप लै बसाऊँ।
मधुर वचन मंद हास होत चाँदनी प्रकास,
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ॥
कंबु कंठ मंजु दाम गौर अंग छवि सुधाम,
कुँदन तैं सरस मृदुल मोहन मन–भायो।
नाल सहित कंज पान देत सदा अभय दान,
तजिकैं अभिमान साह अकबर सिर नायो॥
चरन–कमल कामधेनु सकल कामना सुदेनु,
दरसैं दृग होत चैन आपदा भगायो।
करवा गूदरा पास वृन्दावन करें बास,
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत अपनायो॥

श्रीस्वामी जू महाराज की प्रशस्ति

नमो नमो श्रीहरिदास वृन्दाविपिन–वास,
वर प्रान–सर्वसु बांकेबिहारी।
स्यामा स्याम जुगल रूप–माधुर्य के,
रसिक रिझवार प्रेमावतारी॥
परम वैराग्य–निधि बसत निधिवन सदा,
भावना – लीन सुप्रवीन भारी।
कामना कल्पतरु सकल संताप–हरु,
'अग्रदासअलि' कल्यानकारी॥

Phone : +91-565-2444858, +91-9897233358, 9897919717
Email : info@bankeybihari.info, brijbhakti@yahoo.co.in
website : www.bankeybihari.info